P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-IV*December-2014
E: ISSN NO.: 2349-980X

भारतीय परिपेक्ष्य में वैश्वीकरण की चुनौतियॉ एवं समाधान

अभिलाषा दुबे
अतिथि व्याख्याता,
राजनीति शास्त्र,
शास.स्नातक महाविद्यालय,
बरगी, जबलपुर

सारांश

भारत का ऐतिहासिक वर्तमान व भविष्योत्तर घटित घटनाएं एवं ज्वलंत समस्याऍ जिन्होने भारत का अस्तित्व ही हिलाकर रख दिया, फिर भी भारत ने अपने औपनिवेशिक अस्तित्व से एवं लंबे ''मील का पत्थर'' तय करते हुए एक लंबी त्वरित चाल से विश्व जगत, अपने राष्ट्र में जमी परतंत्रता की बेड़ियों से भारतीय प्रजा को मुक्ति ही नही दिलाई बल्कि आत्मनिर्भर एवं एक सार्वभौमिक संप्रभुत्व संपन्न राष्ट्र के रूप में स्थापित किया किन्तु वैश्विक सदस्यता और विश्व सदस्यता प्राप्ति के साथ ही वैश्विक समस्या से ग्रसित भारत, विभिन्न वैश्विक नीतियों के समाधान हेतु तत्पर है ।

मुख्य शब्दः वैश्वीकरण, वैश्विक समस्याएं, आतंकवाद, वियश्व संपन्नता, असंपन्नता बढ़ती वित्तीय निर्भरता, और समाधान, विश्व सरकार की संकल्पना **''वैसुधैव कुटुंम्बकम''** भारत की आत्मनिर्भरता से परतंत्रता से स्वतंत्रता ।

प्रस्तावना

भारत एक कृषि प्रधान राष्ट्र है । भारत एक आत्मनिर्भरता युक्त राष्ट्र ही नही बल्कि प्राचीन समय में **''सोंने की चिड़ियॉ''** कहा जाने वाला राष्ट्र था आज भारत का यह पद नाम उससे उसके शासक, राष्ट्र या शोषक की भूमिका निभाने वाले राष्ट्र, ब्रिटीश सत्तारूढ़ सरकार ने छीन लिया । भारत को उपनिवेश राष्ट्र बनाकर लगभग 200 वर्षो तक अपने अधीन परतंत्रता का दुखद, शोषित कष्टपूर्ण, जल्लतभरा, असम्मानजन परिवेश युक्त जीवन का अनुभव दिया, ''उॅगली पकड़कर, कौंचां (अगूॅठा) पड़ने का कार्य'' ब्रिटिशों ने किया बाजार की तलाश में आये ये ब्रिटिश नागरिक सूरत में प्रथम पॉव जमाया एक कंपनी की स्थापना की तत्पश्चात भार के अंदर ही अंदर खोखला करना चालू कर दिया, लूट–खसोट की नीति के तहत संपूर्ण भारत को इतना अधिक खोखला कर दिया कि उसकी आर्थिक स्थिति अपनी जर्जर अवस्था में स्थापित थी, तत्पश्चात सत्ता परिवर्तन, भारत का ताज छिना, कोहिनूर भारत से ब्रिटेन ले जाया गया, जो भारत ही नही बल्कि विश्व का अमूल्यवान रत्न था, तत्पश्चात भारतीय इतिहास से सीख लेते हुए अनुभव प्रधान्य का फायदा लेते हुए भारत में महात्मा गांधी, गोखले, लाला लाजपत राय, बालगंगाधर लिक, विपिन चंद्रपाल, नेहरू, आदि स्वतंत्रता के प्रेमियों के भरसक प्रयासों से विभिन्न अहिंसा व सत्य आंदोलनों का सहारा लेकर भारत को परतंत्रता से मुक्ति दिलायी । आज वह भारत अपनी 66वीं सालगिरह मना रहा हैं । आज वही भारत अपने आपको इतना विकसित कर चुका है कि वैश्विक ख्याति प्राप्त राष्ट्र के रूप में स्थापित भारत बन चुका है । आज भारत में लोकतंत्र की स्थापना के साथ ही भारत एक विश्व का सबसे प्राचीनतम, शांतिप्रिय, राष्ट्र रहा है जो विश्व पटल पर अपनी अनूठी संस्कृति एवं सभ्यता के कारण जाना या पहचाना जाता है ।

आज विश्व वैश्वीकरण के उस युग की अगुआई कर रहा है, जिसमें **''विश्व सरकार''** या **''वैसुधैव कुटुंम्बकम''** की धारणा को स्वीकारा ही नही जाता बल्कि आत्मसात कर उसे अपने राष्ट्र में सम्मानीय स्थान प्रदान कर, अपने राष्ट्र को गौरवान्वित अपने श्रेयकर मानते है । एक समय था जब भारत इस विचारधारा या धारणा का पक्ष पोषण ही नही करता था बल्कि विश्व परिवार के समक्ष विभिन्न मंचों पर फिर चाहे वे राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रीय, स्थानीय संगठन ही क्यों ना हो ? अपनी इस विचार धारा से संपूर्ण विश्व को अवगत ही नही कराया बल्कि समस्त राष्ट्र के समक्ष इस विचार के महत्व, उपयोगिता को स्थापित किया । आज भारतीय विचारधारा के प्रतीक व विशेषताओं के लिए हुए वैश्वीकरण को विश्व या संपूर्ण संसार में एक आदर्श विचारधारा के रूप में स्थापित किया । आज वैश्वीकरण ने सारे ब्रम्हांड को सीमित कर संपूर्ण भूस्थल को एक चक्र में सीमित कर विश्व को एक ऐसी

मालारूपी सूत्र में आबद्ध किया है । जिसमें विश्व सरकार एक या विश्व राष्ट्र मोती की तरह दिखते है। वैश्वीकरण से ना केवल एक राष्ट्र की नीति या ढॉचे में ही बाहय या आंतरिक परिवर्तन होता है बल्कि समस्त क्षेत्र में भी परिवर्तन होता है । अंतर्राष्ट्रीय पटल पर घट रही नितनवीन घटनाओं को आकलित किया जाये तो पता चलता है कि सामाजिक क्षेत्र हो या राजनीतिक, आर्थिक क्षेत्र हो, सांस्कृतिक या मानवीयता की ही बात क्यों ना हो ? हर पल हर क्षेत्र चुनौतियों से युक्त वातावरण दिखलाई देता है।

समाज की ओर देख संस्कृति से परे एक या आयाम एक नवीन विचार की झांकी दिखलाई देती है तो फिर संस्कृति सभ्यता भला अछूते कैसे रह सकते है, उन पर भी प्रभाव देखा जा सकता है जो एक नवीनता लिए हुए एक मिश्रितावस्था में है जो अपने मूल को खो रही है तो फिर मानव की गतिविधियां सोच विचार आस्था, मूल विश्वास भी विपरीत अवस्था की ओर पलायनवाद के विचार के लिए हुए आगे बढ़ रहे है, कहने का मतलब है कि संरक्षण या सुरक्षा के नाम पर ही नही आधुनिकता की परिपाटी पर चलकर कुछ नया करने की होड़ में अविष्कार तो कर रहे है दूसरी ओर वह अविष्कार अभिशाप बनता जा रहा है तो फिर व्यक्तित्व के विचार से हटकर समग्रता के विचार या सामूहिक हित या संरक्षण की ओर प्रयास जारी है जिसे ''वैश्वीकरण'' का विचार कहा जाता है । उस वैश्वीकरण के विचार को साकार कर व्यवहारिक धरातल पर साक्ष्य प्रस्तुत करने हेतु प्रत्येक राष्ट्र लालायित है, वैश्विक सरकार, वैधता के साथ सहयोग व सहपाठी बनने हेतु प्रत्येक राष्ट्र नितनयी नीतियों का आविर्भाव ही नही कर रहा है बल्कि वैश्विक सरकार के समक्ष विश्व सरकार में नेतृत्वकारी भूमिका का निर्वाह करने हेतु परस्पर वैश्विक राष्ट्र के समक्ष नेतृत्व की चुनौती, स्टाफ की चुनौती भी प्रबलतर नही बल्कि महाशक्ति के रूप में उभर कर आने हेतु भी प्रतिद्वदिंता व्याप्त है, साथ ही प्रत्येक राष्ट्रों के समक्ष, आतंकवाद एक वैश्विक समस्या, ने राष्ट्रों की नींव को खोखला कर दिया है, पीड़ित राष्ट्र की विकास दर ही प्रभावित नही होती बल्कि समग्र हानि का परिचायक बन जाता है । राष्ट्र फिर वह भारत हो या अमेरिका या अन्य राष्ट्र ही क्यों न हो । आतंकवाद ने ऐसे भययुक्त परिवेश का निर्माण किया है कि मानवीयता की रूह काप उठती है । ऐसी ही कुछ ज्वलंत समस्या, पर्यावरण की भी है, जो प्रकृति से छेड़छाड़ का परिचायक है, ओजोन परत पर छिद्र होना, ग्रीन हाउस प्रभाव, पर्यावरण असंतुलन, ध्रुवीय क्षेत्रों में बर्फ का पिघलना, मानव सभ्यता के लिए खतरा बन चुके है तो दूसरी ओर पारस्परिक सहयोग सहिष्णुता के विचार के प्रति गिरती मानवीय प्रवृत्ति जिससे पारस्परिक सहयोग के स्थान पर संघर्ष को जन्म दिया, सौहार्द भाईचारे के बदले शत्रुता और अगुआ राष्ट्र या महाशक्ति बनने की होड़ को जन्म दिया, एक नया विचार जो प्राचीन विचार की कहीं संपुष्टि कही जा सकती है – ''राजनीति और जंग में सबकुछ जायज है ।'' इस आधार पर पवित्रता के विचार या गांधीजी के विचारानुसार – ''पवित्र लक्ष्य की प्राप्ति, पवित्र साधनों द्वारा प्राप्त किया जाना चाहिए'' का विचार बेमायने हो गया है क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र वैश्वीकरण की चाह में विशेषता को लेते हुए किसी ''गुण को ही विकसित करता चला जा रहा है, जहॉ अर्थ को प्राथमिक आधार मानकर जिस में पूँजी की प्राप्ति ज्यादा ही क्यों ना हो, उसी कार्य को प्रोत्साहन देने का कार्य करेंगे तो शस्त्रीकरण की होड़, परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र बनने की होड़ फिर भंडार में उपस्थित अस्त्रों–शस्त्रों के प्रयोग की होड़ फिर वह झूठी शान में ही किया गया कार्य ही क्यों न हो ? फिर उसमें अनेक संपत्ति संपदा, जन–धन की हानि ही क्यों न हो रही हो ? किन्तु प्रयोगकर्ता राष्ट्र की छबि व साख दादागिरी सी जरूर हो जाती है जिससे छुटपुट राष्ट्र भयाक्रांत होकर दुबक्कर बैठ जाते है, और विरोध नही करते, ये वैश्विक समस्याएँ ही विश्व पटल पर बहुत बड़ी चुनौतियॉ है जिसे निपटने हेतु सम्मिलित प्रयासों की आवश्यकता है, अन्यंत्र व्यर्थ है।

भारत ने ही यह अमूल्य निधी – ''वैश्वीकरण विचार'' विश्व समुदाय को दिया । आज वैश्वीकरण मार्ग में अनेक नवीन चुनौतियां/समस्याए आ खड़ी हुई हैं ।

नेतृत्व की समस्या

आज विश्व के समक्ष एक बहुत बड़ी समस्या विश्व नेतृत्व की बन चुकी है, यह तय कर पाना की कठिन हो चुका है कि किस राष्ट्र को, किस राष्ट्र के किस प्रतिनिधि को, किस पद हेतु उचित समझाा जाये, किस विचारधारा, राष्ट्र व व्यक्ति को प्राथमिकता दी जाये, क्या उचित होगा ? क्या किया जाये कि उचित निर्णय हो ? क्या किया जावे ? बाध्यकारी सता किस व्यक्ति अथवा संस्था की हो ? शासकीय व प्रशासकीय इकाई का निरूपण, निर्माण व स्थापना कब, कहॉ, क्यों और कैसे हो ? आदि ।

स्टाफ सूत्र की समस्या

स्टाफ व सूत्र अभिकरण व इकाईयों की स्थापना कहॉ और किस के अधीनस्थ हो ? लागाम किस राष्ट्र के हाथों में सौंपना ज्यादा उचित होगा और किसे सौंपना अनुचित ? यह प्रश्न अनिश्चित व भंवर में कंसाते है, जिसे साकार करने हेतु **UNO** का अस्तित्व स्थापित हो चुका हैं, बजाये इसके विश्वसरकार व मानवीयता के नाते मानवीय अधिकारों की जो घोषणा के साथ ही प्रयास सतत् जारी है, जो एक सूत्र आबद्धीकरण को अप्रत्यक्ष व प्रत्यक्षता ही प्रभावित करते है।

1. आवागमन, व्यापार वाणिज्य की समस्या ?
2. ऊॅच–नीच, गरीबी–अमीरी विचारधारा का प्रश्न ?
3. उत्तर–दक्षिण के राष्ट्र के मध्य वैचाारिक मतभेद ?
4. वैमनष्यता की मानव व्यवहार की पराकाष्ठा ?
5. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर धर्म व सत्य का घटता महत्व का विचार और वैज्ञानिकता का तर्क ?
6. आतंक और भय की राजनीति ?
7. कुर्सी के इर्द गिर्द चक्कर काटती राजनीति ?
8. भ्रष्टाचार ?
9. नैतिकता का पतन ?
10. पारस्परिक निर्भरता के परिणाम स्वरूप–अत्याधिक विश्व बैंक से ऋण का दवाब ?
11. कानून एवं संविधान में वैश्वीकरण को स्थान ?
12. ईमानदारी व सदचरित, अस्तित्व व व्यक्ति का निर्माण ना होना ?
13. परमाणु निःशस्त्री की नीति ?
14. संरक्षण का प्रश्न ?
15. सीमा सुरक्षा पर अत्याधिक खर्च ?

समाधान हेतु सुझाव –

भ्रष्टाचार मुक्त राष्ट्र का निर्माण हो

संपूर्ण वैश्विक जगत में एक व्यवस्था, आचार–विचार, सुव्यवस्थात्मक स्वरूप एवं व्यस्थित शासकीय प्रशासकीय व्यवस्था हेतु भ्रष्ट आचरण जिसे की भ्रष्टाचार कहा जाता है उससे उन्मुक्ति की आवश्यकता है । प्रत्येक राष्ट्र एवं देश को उसके समग्र विकास एवं समस्याऍं से मुक्ति का एक मात्र मार्ग भ्रष्टाचार मुक्त भारत का एवं भ्रष्टाचार मुक्त विश्व का निर्माण किया जाना चाहिए जो प्रयासों से ही संभव है जो सामूहिक प्रयासों से ही संभव है ।

सद्चरित्र नागरिक का निर्माण हो

आज के इस भौतिकवादी युग में व्यक्ति ने अपने मानवीयता आचरण को ही खो दिया है जो एक मानवीय जीवन में मनुष्य के मुख्य बर्हुमुखी विकास हेतु उत्तरदायीतत्व होता है । एक व्यक्ति का या यूँ कहे की एक आदर्श व्यक्ति का निर्माण, मानवीय आचरण व चरित्र से होता है जो उच्च चरित्रवान व्यक्ति ही सत्जन यानि सज्जन कहलाता है जो हमेशा अच्छे गुणों से परिपूर्ण होता है उच्च चरित्रवान व्यक्ति ही एक आदर्श व्यक्तित्वधारी व्यक्ति होता है जो सत्यवान, संयमी, ईमानदार, सद्चरित्र व्यक्ति ही आदर्श नेतृत्वधारी व्यक्ति होता है जो विभिन्न समस्याओं से ग्रसित विश्व को समस्यामुक्त बनाने हेतु प्रबल दावेदार व्यक्ति होगा ।

नैतिकता व नैतिक गुणों का विकास किया जाए

भारत को ही नहीं बल्कि विश्व की समस्याओं से भारत को मुक्त कराने के लिए नैतिक गुणों का विकास किया जाना आवश्यक है, नैतिक आचरण संहिता व आस्था मूल्य की परिचायक – सम्मान, सौहार्द, सहयोग, धैर्य, सहिष्णुता, प्रेम, दया, करूणा, आदरभाव जो नैतिक आचरण ही नैतिकता का विचार उद्वेलित करते है जो एक आदर्श राष्ट्र विश्व निर्माण हेतु परम आवश्यक है । एक स्वच्छ स्वस्थ्य, नैतिक भारत का निर्माण हो, जिससे विश्व को एक पवित्र संकल्पना प्रदाय हो ।

शस्त्रीकरण पर व्यय को कम किया जाय

शस्त्रीकरण की होड़ से विश्व को मुक्त कराने के उपरांत ही एक आदर्श वैश्विक पर्यावरण का निर्माण होगा जो शांतिमय सौहार्दपूर्ण एवं सहमित्रता को परिभाषित करेगा, शत्रुता का भाव ही एक भयावह विचारतत्व है जो विचार को ही नही बल्कि एक राष्ट्र को दूसरे से पाटता है बांटता है । इससे विलगता का भाव ही जन्म नही लेता बल्कि विश्व जगत में भयाक्रांत या भययुक्त माहौल को जन्म देने वाला होगा जिससे बड़े धनी राष्ट्र और धनी होते जायेगे क्योंकि शस्त्रों का निर्माण उनकी एक बड़ी आय का स्त्रोत होगा जबकि निर्धन राष्ट्रों के लिए शस्त्रीकरण एक भययुक्त वातावरण से मुक्ति पाने व असुरक्षा से बचाव हेतु अनचाहा व्यय होगा जिससे विकास मार्ग अवरूद्ध होगा अतः शस्त्रीकरण के विचार का ही अंत होना चाहिए ।

आतंकवाद मुक्त भारत एवं विश्व का निर्माण

वैश्विक स्तर पर ही नही बल्कि प्रत्येक राष्ट्रीय या क्षेत्रीय आधार पर भी दृष्टिपात किया जावे तो पता चलता है कि संपूर्ण विश्व जगत की अहम समस्या के रूप में आतंकवाद रूपी महामानवीय आपदा का जन्म हुआ है जिसने मानवीय संपदा के अस्तित्व को झकझोर कर रख दिया है जिसे स्थायी रूप से मुक्ति प्राप्त करने हेतु वृहद सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है तभी एक आतंक मुक्त भारत एवं विश्व का निर्माण होगा ।

आदर्श चरित्र का निर्माण

एक आदर्श एक नमूना विश्व की ओर संकेत देने वाला होता है जो साफ–पाक पवित्र छबि को ही नही बल्कि स्वच्छता का परिभाषिक होता है फिर वह एक व्यक्ति हो या राष्ट्र उसकी छबि उसके आदर्श उसका विचार होता है जिससे उसके राष्ट्र की व्यक्तित्व की छबि वैश्विक छबि या अस्मिता बन जाती है जो व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण, राष्ट्र निर्माण को विश्व निर्माण को जोड़ती है ।

अत्यधिक विकास के बहुआयामी प्रयास किये जाये

भारत द्वारा लगातार इस समस्या से ग्रसित व परेशानी से 50 वर्षो से झूझने के बावजूद भी समस्या के निदान हेतु प्रयास अब वैश्विक आधार पर किये जा रहे है जिसे वैश्विक समस्या के रूप में 11 सितंबर 2011 को अमेरिकी आतंकवादी हमले के बाद से ही चिन्हित किया गया जबकि भारत व विश्व के अन्य राष्ट्र लंबी अवधि के इस समस्या के पीड़ित थे किन्तु एक अंतर्राष्ट्रीय जागरूकता का परिचय 2011 के बाद से ही हुआ इस हेतु आज राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय, क्षेत्रीय सहयोग संगठनों के सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है ताकि इस समस्या का त्वरित उन्मूलन हो सके । बहुआयामी अलग–अलग विचारगत प्रयासों की आवश्यकता है ।

आधुनिक तकनीक व शिक्षा का विकास किया जाये

शिक्षा का आधुनिक विकास एवं नवीन तकनीकी प्रयासों से न केवल जनसमस्या के निराकरण के प्रयास ही किये जा सकते है बल्कि समूल नष्ट किया जा सकता है।

विचारधारा में व्यापक परिवर्तन किया जावे

आज वैचारिक क्रांति के इस युग में पूंजीवादी हो या समाजवाद, साम्यवादी हो , उदारवाद, उग्रवाद या धर्मवाद, प्रजातंत्रवाद, या गांधीवाद आदि विभिन्न विचारधारा, लेनिनवाद, माओवाद को अस्तित्व ने विश्व को टुकड़ों में विभाजित किया है, जो अपने आप में कभी अच्छा नही हो सकता, अतः ''सर्व कल्याण सदा सुखाय'' ''सर्वजन हिताय, सदा सुखाय'' की विचारधारा का विश्व पटल पर स्वीकारोक्ति की आवश्यकता है ताकि प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक विचार, आदर्श हो तो समस्या जनित राष्ट्र से विश्व मुक्त हो जाए और स्वतंत्रता स्वच्छ वैचारिक अनुभूति जो ''सांच को कोई आंच'' नही को जन्म देगा, एक नवीन युग का सूत्रपात होगा जो विश्व कल्याण हेतु परमावश्यक है।

वैश्वीकरण का प्रचार–प्रसार किया जावे

वैश्विक विचार की ओर उन्मुख करने हेतु विश्व संक्ल्प का स्वप्न दिखाना होगा ताकि एक परिवार विलग होकर भी कुटुंब से परे नही होता इसी तरह राष्ट्र अलग होकर भी विश्व से जुड़े हुए है इस भावना का विकास करने हेतु व्यापक प्रचार प्रसार की आवश्यकता है, इस हेतु व्यापक प्रयासों की आवश्यकता है ।

निष्कर्ष

भारतीय परिपेक्ष्य में वैश्वीकरण उसकी आत्माभिव्यक्ति ही हैं जो काफी समय बाद विश्व द्वारा स्वीकारा गया, अपने सफल अस्तित्व लिए स्थापित हुआ । आज वैश्वीकरण विश्व का केन्द्रीकरण ही नही संकलन भी है ।

भारती परिपेक्ष्य में वैश्वीकरण की चुनौतियों एवं समाधान हेतु आज हम कह सकते है कि प्रत्येक राष्ट्र ही नही बल्कि वैश्विक स्तर पर भी प्रयास हो रहे है जो विश्व समस्या से मुक्ति पाने की कल्पना को साकार बनाने हेतु आतुर है । कुछ हद तक सफलतम प्रयासो में **UNO, SAARC, ASIAN, APEC, EIU** आदि संगठनों के प्रयास की ज्वलंत उदाहरण कहे जा सकते है ।

संदर्भ ग्रंथ

1. अन्तर्राष्ट्रीय संगठन–डॉ. हरिश्चन्द्र शर्मा
2. भारतीय शासन एवं राजनीति – डॉ. बी. एल. फाड़िया समसामयिक एवं सामाजिक मुद्दे– डॉ. जगदीश चन्द्र वशु
3. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति– डॉ. प्रभुदत्त शर्मा
4. इंडिया टुडे दिसम्बर 2014
5. वर्ड सर्वे रिर्पोट 2013–2014
6. वैश्विक समस्याएँ– डॉ. जगमोहन मिश्र